THE STUDY
An Institute for IAS

पूर्व मध्यकालीन भारत

- मणिकांत सिंह

सामंतवाद का इतिहास लेखन

डी. डी. कोशाम्बी -

मार्क्सवादी विद्वानों में डी० डी० कोशाम्बी, आर. एस. शर्मा, वी० एन० यादव, डी० एन० झा आदि ने सामंतवाद की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की। मार्क्सवादी विद्वान डी. डी. कोशाम्बी ने सामंतवाद का अध्ययन किया तथा इसे ऊपर से सामंतवाद एवं नीचे से सामंतवाद का नाम दिया। ऊपर से सामंतवाद का आशय है कि राजा के द्वारा अधीनस्थ शासक को विस्थापित नहीं किया जाना तथा उनसे राजस्व की राशि प्राप्त किया जाना वहीं नीचे से सामंतवाद का अर्थ है कि किसानों के बीच से ही क्षेत्रीय जमींदारों के रूप में मध्यस्थों का उभरना। यह स्थिति दिल्ली सल्तनत की स्थापना तथा उसके बाद आयी।

आर. एस. शर्मा -

आर. एस. शर्मा ने ऊपर से सामंतवाद तथा नीचे से सामंतवाद के विभाजन को अस्वीकार कर दिया तथा उन्होंने केवल सामंतवाद शब्द का प्रयोग किया है। आर. एस. शर्मा सामंतवाद के उद्भव को भूमि अनुदान से जोड़ते हैं। उनके विचार में मौर्योत्तर काल में राजाओं के द्वारा धार्मिक अनुदान दिये गए किन्तु दानग्रहिता को केवल राजस्व का अधिकार दिया गया। फिर आगे उन्हें प्रशासनिक अधिकार भी सुपुर्द किये जाने लगे जैसा कि हम एक वाकाटक शासक प्रवरसेन द्वितीय के दान पत्र से सूचना पातें हैं। फिर जब गुप्त काल के अन्त में वाणिज्य-व्यापार का पतन हुआ तो मुद्राओं की कमी पड़ने लगी। अत: अब अधिकारियों को तनख्वाह भी भूमि अनुदान के रूप में दिया जाने लगा। इस प्रकार धार्मिक अनुदानों की तुलना में गैर-धार्मिक अनुदानों की संख्या बढ़ गई। पाँचवी सदी तथा 13वीं सदी के बीच बड़ी संख्या में मन्दिरों और मठों को अनुदान दिये गए। सबसे बढ़कर 10वीं सदीं तथा उसके पश्चात् बड़ी संख्या में सैनिक अनुदान भी दिए गए। इसके अतिरिक्त आर. एस. शर्मा ने भारतीय सामंतवाद में उप सामंतीकरण तथा कृषि दासता जैसे तत्वो को भी ढूढनें का प्रयत्न किया।

आर. एस. शर्मा के विचारों को चुनौती -

1965 में आर. एस. शर्मा ने भारतीय सामंतवाद नामक ग्रन्थ लिखकर अपने विचारों को प्रकट किया। शीध्र ही उनके विचारो को दो महत्वपूर्ण विद्वानों के द्वारा चुनौती दी गयी। प्रथम विद्वान थे डी. सी. सरकार तथा दूसरे विद्वान थे बी. डी. चट्टोपाध्याय। डी. सी. सरकार ने यह स्पष्ट किया कि आर. एस. शर्मा जिसे सामंत कहते है वे एक साधारण जमींदार से अधिक नहीं थे। उसी प्रकार **बी. डी. चट्टोपाध्याय** ने न केवल भूमि अनुदान के प्रभाव की अलग व्याख्या की वरन् उन्होनें वाणिज्य व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण के पतन की अवधारणा को भी अस्वीकार कर दिया। उनके विचार में भूमि अनुदान से राजा की शक्ति में कमी नहीं आयी अपितु वृद्धि हुई क्योंकि भूमि अनुदान के माध्यम से न केवल नए क्षेत्रीय राज्यों का निर्माण हुआ वरन् क्षेत्रीय शासकों ने वैधता भी प्राप्त की। वी. डी. चट्टोपाध्याय ऐसा मानते हैं कि भूमि अनुदान के परिणाम स्वरूप दो प्रक्रियाएँ एक साथ घटित हुई। एक तरफ जनजातीय क्षेत्र में कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार हुआ तो दूसरी तरफ कबायली जनसंख्या कृषक के रूप में तब्दील होती गयी। इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप सीमावर्ती क्षेत्रों में कबायली मुखिया क्षेत्रीय राजा के रूप में ढ़ल गए तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए उन्होनें अपनी वंशावली किसी महत्वपूर्ण राजवंश से जोड़नी आरम्भ कर दी। इस प्रकार बी. डी. चट्टोपाध्याय ने राजनीतिक विखण्डन की जगह राजनीतिक संघटन की अवधारणा को स्वीकार किया। उनकी इस अवधारणा को समन्वित राज्य (Integrative State System) की अवधारणा के रूप में माना जाता हैं।

हरवंश मुखिया ने भी आर. एस. शर्मा के विचार को कड़ी चुनौती दी तथा यह स्थापित करने का प्रयत्न किया कि सामंतवाद की अवधारणा यूरोपीय समाज की तरह भारत पर लागू नहीं होती। उनके विचार में पूँजीवाद की तरह सामंतवाद कोई विश्व व्यवस्था नहीं थी। वस्तुत: पूँजीवाद को एक विश्व व्यवस्था होने का कारण था पूँजीवाद देशो के द्वारा मुनाफे में वृद्धि के लिए विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अपने बाजार का प्रसार किया गया किन्तु जैसाकि हम जानते हैं कि सामंती व्यवस्था खपत के प्रोत्साहन पर आधारित थी। यह मुनाफे से प्रेरित नहीं थी। अत: दूसरे क्षेत्र में इसके प्रसार की गुजाइंश नहीं थी। फिर हरवंश मुखिया ने दो मुद्दों पर आर. एस. शर्मा का विरोध किया। प्रथम, यूरोप में सामंतवाद का विकास उसकी मूलभूत संरचना से ही हुआ था किन्तु भारत में जैसा कि आर. एस. शर्मा मानते हैं कि यह राजकीय प्रयास का नतीजा था। दूसरे, यूरोप में सामंतो ने मेनर प्रणाली के तहत् उत्पादन की प्रक्रिया पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था किन्तु भारत में इस प्रकार का नियंत्रण नहीं देखा गया।

THE STUDY

सबसे बढ़कर आन्द्रे विंक नामक विद्वान ने यह धारणा रखी कि आर. एस. शर्मा ने भारतीय समांतवाद की व्याख्या में एक यूरोपीय विद्वान हेनरी पिरेन की अवधारणा को अपनाया है। सर्वप्रथम हेनरी पिरेन ने ही वाणिज्य व्यापार तथा नगरों के पतन की अवधारणा रखी थी। इस प्रकार विंक महोदय ने आर. एस. शर्मा को 'इंडियन पिरेन' का नाम दिया।

आर. एस. शर्मा का जवाब तथा भारतीय सामंतवाद के कुछ नवीन पहलू –

आर. एस. शर्मा ने अपने **'निबन्ध भारतीय सामंतवाद कितना सामंती'** में अपने आलोचकों की चुनौती का उत्तर देने का प्रयास किया। **बी. डी. चट्टोपाध्याय** की अवधारणा को खण्डित करते हुए उन्होनें नगरों के पतन के पुरातात्विक साक्ष्य की ओर संकेत किया। फिर हरवंश मुखिया के मत का उत्तर देते हुए आर. एस. शर्मा ने अपनी अवधारणा में कुछ संशोधन भी लाए तथा कलियुग की अवधारणा पर विशेष बल देकर उन्होनें एक सामाजिक संकट की ओर संकेत किया। उन्होने यह स्पष्ट करते हुए कहा कि राजा के द्वारा यह भूमि अनुदान स्वेच्छा से नहीं दिया गया था वरन् इस सामाजिक संकट का सामना करने के क्रम में ही दिया गया था। उसी प्रकार आन्द्रे विंक के मत का जवाब देते हुए उन्होने यह घोषित किया कि मुझसे पहले निहार रंजन रे तथा डी. डी. कोशम्बी भी नगरो के पतन पर लिख चुके हैं जबकि इनमें से काई भी हेनरी पिरेन को नहीं पढ़ा था।

फिर भारतीय सामंतवाद की अवधारणा में कुछ नए प्रकार के संशोधन भी देखे जाते हैं। साथ ही इसमें कुछ नए आयाम भी खुलकर आये। हाल में नगरों के पतन की अवधारणा को बड़ी गंभीर चुनौती मिली है तथा वी. डी. चट्टोपाध्याय के साथ साथ रणवीर चक्रवर्ती जैसे विद्वान ने भी नौवीं सदीं में नगरो का प्रमाण प्रस्तुत किया है। फिर आर. एस. शर्मा ने समकालीन स्थापत्य कला मे भी सामंती तत्वों का प्रभाव देखा है। डी. एन. झा ने भी सामंतवाद के अध्ययन में नये सास्कृतिक आयाम जोड़ दिये हैं। भक्ति की अवधारणा को सामंती चेतना से जोड़ा गया है। जहाँ कुछ विद्वान भक्ति के उद्भव को ब्राह्मणवादी प्रभुत्व के विरूद्ध जनसामान्य की प्रतिक्रिया करार देते आ रहे थे वहीं सामंतवाद पर अध्ययन करने वाले विद्वानों ने भक्ति को सामंती चेतना से जोड़ते हुए भक्त एवं भगवान के सम्बन्धों में सामंत तथा अधीनस्थ किसानों के सम्बन्धों को रेखांकित किया है। इस प्रकार सामंतवाद की व्याख्या में एक वैचारिक–सास्कृतिक आयाम भी जुड़ गया है।

सामंतवाद को प्रेरित करने वाले कारक तथा उसकी विशेषताएँ –

सामंतवाद प्रशासनिक क्षेत्र में एक पिरामिडनुमा ढाँचा के विकास की ओर इंगित करता है। इस प्रकार का एक ढाँचा सामान्य लोग एवं राजा के बीच कायम हो गया था क्योंकि मध्यवर्ती स्थल पर विचौलियों का एक समूह अस्तित्व में आ चुका था। सामंतवाद की व्याख्या मुख्यत: यूरोपीय समाज के सन्दर्भ मे की गयी है किन्तु गैर यूरोपीय समाज में भी मध्यकाल में एक ऐसी व्यवस्था कायम हुई जो यूरोपीय सामंतवाद से मिलती जुलती प्रतीत होती है। भारत में भी 8वीं सदीं तथा उसके पश्चात् एक ऐसी व्यवस्था कायम हो गयी जिसे भारतीय सामंतवाद का नाम दिया जाता है।

भारतीय सामंतवाद को प्रेरित करने वाले कारक –

1. सामंतवाद के उद्भव का एक महत्वपूर्ण कारण था राजनीतिक–प्रशासनिक क्षेत्र में एक प्रकार का स्तरीकरण कायम होना। जैसा कि हम जानते हैं कि यह प्रवृति मौर्योत्तरकाल में ही आरम्भ हो गयी थी। शक एवं कुषाण शासकों ने भारतीय शासकों को पराजित किया किन्तु उन्होनें उन शासकों को समाप्त नहीं किया अपितु उन्हें अधीनस्थ शासक के रूप में बने रहने दिया। यह एक विशिष्ट प्रकार की प्रवृति थी जो हमें मौर्यकाल में अनुपस्थित दिखती थी। वस्तुत: इस काल में भारत मे धर्म विजय की अवधारणा लोकप्रिय होने लगी थी। इस अवधारणा के तहत् पराजित शासकों के राज्य अथवा भू–भाग के अधिग्रहण को अनैतिक करार दिया गया। आगे हम इस नीति का विकास समुद्रगुप्त के ग्रहणमोक्ष की नीति में देखते हैं। अर्थात पराजित राज्यों के शासकों को उनका क्षेत्र लौटा दिया गया तथा उन्हें सामंतो के रूप में स्थापित कर दिया गया।
2. बाह्य आक्रमण ने भी विखराव और विघटन की प्रक्रिया को प्रोत्साहन दिया। जैसा कि हम देखतें हैं कि हूणों के आक्रमण के कारण उत्तर–पश्चिम के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्धों को धक्का लगा। राज्य की स्थिति कमजोर हो गयी तथा अधीनस्थ शासक एवं सामंतो की महत्वाकाक्षा को प्रोत्साहन मिला। उदाहरण के लिए, गुप्तों के अधीन एक प्रमुख सामंत मालवा के गर्वनर यशोधर्मन ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया तथा अपने एक अभिलेख में हूणो को पराजित करने को दावा किया। आगे तुर्की आक्रमण भी इस प्रक्रिया को बल प्रदान करता रहा।

THE STUDY

3. फिर हम सामंतवाद के उद्भव को भूमि अनुदान से जोड़कर देख सकते हैं। ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में ये अनुदान ब्राह्मण एवं बौद्ध भिक्षु को दिए गए। किन्तु उन्हें महज राजस्व प्राप्त करने का अधिकार था परन्तु पाँचवी सदीं के अभिलेख से यह सूचना मिलती है कि दान ग्रहिताओ को प्रशासनिक अधिकार भी सौपें जाने लगे। इस प्रकार राज्य का नियंत्रण कमजोर हुआ। फिर गुप्त काल के उत्तरार्द्ध में वाणिज्य व्यापार एवं मुद्रा अर्थव्यवस्था को धक्का लगा। अत: गुप्त काल के पश्चात् मुद्राओं की कमी के कारण अधिकारियों को भी भूमि अनुदान में वेतन दिया जाने लगा। इस प्रकार नौकरशाही पर भी राज्य का नियंत्रण कमजोर पड़ता गया। फिर धीरे-धीरे गैर धार्मिक अनुदानों की संख्या बढ़ती गयी और दसवीं सदीं के पश्चात सैनिक अनुदानों पर विशेष रूप में बल दिया जाने लगा।

विशेषताएँ -

1. सामंती व्यवस्था का एक प्रमुख अभिलक्षण था राजनीतिक विखण्डीकरण। दूसरे शब्दों में लम्बवत् विभाजन, सम्प्रभुता का विभाजन तथा अधीनस्थ शासकों की उपस्थिति इस व्यवस्था एक प्रमुख लक्षण है।
2. इस काल मे राजा सामान्य किसानों के बीच मध्यस्थों की एक श्रृखला कायम हो गयी। याज्ञवल्क्य स्मृति पर एक टीका में मध्यस्थों की चार श्रेणियाँ बतायी गई हैं। इसके परिणाम स्वरूप जहाँ राजकीय आय में कमी आयी वहीं किसानों का शोषण हुआ।
3. वाणिज्य व्यापार के पतन के कारण **मुद्रा अर्थव्यवस्था तथा नगरीकरण को धक्का** लगा तथा अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व अत्याधिक बढ़ गया। किन्तु इसके साथ ही एक स्वामी जमींदार वर्ग तथा एक अधीनस्थ कृषक वर्ग अस्तित्व में आया। यह जमींदार वर्ग महज भूमि पर अपने स्वामित्व के दावे के आधार पर अधिशेष का एक बड़ा भाग प्राप्त करने लगा। दूसरी तरफ किसान परम्परा एवं रीति रिवाज के आधार पर इन जमींदारों को उत्पादन का एक अंश देने लगे।
4. **मंदिर तथा मठों के साथ भी बड़ी-बड़ी जमींदारियाँ** जुड़ गयीं तथा ये भूमि पर अपना दावा करने लगीं।
5. कुछ अनुदानों में किसानों एवं शिल्पियों को भी भूमि से बांध दिया गया। अर्थात वे भूमि को खाली नहीं कर सकते थे। इस प्रकार कृषि तथा शिल्पों का सामंतीकरण हुआ।
6. कुछ बड़े सामंतो ने अपने अनुदान का एक अंश अधीनस्थ सरदारों को देना आरम्भ किया। इसके परिणामस्वरूप उप-सामंतीकरण की प्रवृति आरम्भ हुई।
7. **राजपूत शासकों के अधीन बड़ी संख्या में गांव को समूहों में विभाजित कर अपने रक्त सम्बंध के लोगो में आबंटित** किया गया। इस प्रकार के अनुदानों का सैनिक स्वरूप था। अर्थात, अनुदान प्राप्त कर्ता को राज्य को सैनिक सेवा प्रदान करनी होती थी।
8. सामंती चेतना की अभिव्यक्ति समकालीन कला तथा धर्म के क्षेत्र में भी देखी जा सकती थी। मंदिरों में मुख्य देवता के निकट गौण देवताओं की उपस्थिति सामंतचक्र की अवधारणा को दर्शाती है। उसी प्रकार भक्ति की अवधारण के तहत भक्त और भगवान के सम्बन्ध भी सामंती सम्बंधो को रेखाकिंत करते हैं।

भारतीय सामंतवाद तथा यूरोपीय सामंतवाद में अन्तर -

1. यूरोपीय सामंतवाद का एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण रहा है **कृषि दासता तथा मेनर प्रणाली।** इसके तहत् भू-स्वामी सम्पूर्ण उत्पादन की प्रक्रिया पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेता था। किन्तु भारत में इस तरह की पद्धति कायम नहीं रही। यहाँ किसानों को भूमि से बांधने की प्रवृति नहीं रही इसका महत्वपूर्ण कारण था कि यूरोप की तुलना में भारत की भूमि अधिक उपजाऊ थी। अत: यहाँ उतनी बड़ी मात्रा में भूमि को आबाद करने की जरूरत नहीं पड़ी। दूसरे, यूरोप की तुलना में यहाँ जनसंख्या भी अधिक थी। इसलिए यहाँ कृषक श्रमिकों को भूमि से बाँधने की जरूरत नहीं थी। यही वजह है कि **भारतीय सामंतवाद को अर्द्धसामंती कहा** गया है।
2. यूरोप में सामंतवाद का उद्भव दास व्यवस्था से सामंतवाद में संक्रमण के रूप में हुआ है किन्तु भारत में इस प्रकार का संक्रमण नहीं देखा जाता। वस्तुत: भारत में दास व्यवस्था तो थी परन्तु दासों पर आधारित उत्पादन प्रणाली नहीं थी। यही वजह है कि मौर्यकाल में मेगस्थनीज भारत में दास व्यवस्था की अनुपस्थिति की बात करता है।

THE STUDY

THE STUDY

(An Institute for IAS)

Divyam Educom Pvt. Ltd.

Our Destiny in Our Hands

HISTORY

By Manikant Singh

THE STUDY under the expert guidance of MANIKANT SINGH has continued its journey on the path of success.....

अभ्यर्थियो! मुख्य परीक्षा में वैकल्पिक विषयों (Optional Subjects) में प्रश्नों की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि आपकी सफलता में भविष्य में वैकल्पिक विषय की निर्णायक भूमिका होगी। वैकल्पिक विषयों में अत्यधिक स्तरीय प्रश्न पूछे जाने लगे हैं। अत: वैकल्पिक विषय के लिए दीर्घकालीन तैयारी की जरूरत है। इसलिए अब आवश्यक है कि प्रारम्भिक परीक्षा से पूर्व वैकल्पिक विषय की तैयारी का अधिकांश भाग पूरा हो चुका हो क्योंकि प्रारम्भिक परीक्षा के बाद यह संभव नहीं हो सकेगा।

बदले हुए परिदृश्य में इतिहास एक अति महत्वपूर्ण वैकल्पिक विषय के रूप में उभरा है। इसके निम्नलिखित कारण हैं। प्रथम, इसका सामान्य अध्ययन में बहुत बड़ा योगदान (मुख्य परीक्षा प्रथम पत्र में 100 से 110 अंक तथा प्रारंभिक परीक्षा में 32 से 34 अंक) है। दूसरे, यह विषय सरल एवं सुग्राह्य है। अन्त में, इसमें "THE STUDY" जैसे विश्वसनीय संस्थान का सहयोग प्राप्त है।

हमारी रणनीति किस प्रकार अन्य से अलग है?

प्रचलित रणनीति

1. इतिहास के अध्ययन का अर्थ लगाया जाता है अधिक-से-अधिक सूचनाओं एवं तथ्यों का संग्रह करना।
2. अध्यापन में टॉपिक की क्रमबद्धता का प्राय: निर्वाह नहीं किया जाता (गुप्तकाल के अध्यापन के पश्चात् मौर्यकाल का अध्यापन, प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् जर्मनी के एकीकरण का अध्यापन आदि इस क्रमबद्धता का उल्लंघन है।)
3. अभ्यर्थियों को इतिहास के अध्ययन में प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोणों (इतिहास लेखन) से अवगत नहीं कराया जाता। अत: किसी जटिल प्रश्न पर अपना झुकाव (Stand) स्पष्ट करना उनके लिए संभव नहीं हो पाता।
4. समय की बचत को ध्यान में रखकर कक्षा में भी तथ्यों को प्वाईंट्स में प्रदर्शित किया जाता किंतु इस कारण से अभ्यर्थियों की टॉपिक पर पूर्ण समझ विकसित नहीं हो पाता।
5. लेखन कला का विकास नहीं हो पाता।

हमारी रणनीति

1. हमारे लिए इतिहास तथ्य (Fact) कम एवं विश्लेषण (Analysis) अधिक है।
2. हम तीन चरणों (Stages) में विषय की तैयारी को पूर्ण करते हैं। प्रथम चरण में हमारा बल विषय में छात्रों की दिलचस्पी एवं मौलिक समझ विकसित करने पर होता। इसलिए हम उन्हें निरन्तरता एवं परिवर्तन (Continuity and Changes) का ज्ञान देते।
3. द्वितीय चरण में हमारा बल इतिहास लेखन के ज्ञान (Knowledge of Historiography) पर होता है ताकि अभ्यर्थी स्तरीय प्रश्नों (Standard Questions) पर अपना झुकाव स्पष्ट कर सकें।
4. तीसरे चरण में लेखन शैली का विकास किया जाता है। इसके लिए हम अभ्यर्थियों को Thesis-based Writing का प्रशिक्षण देते हैं।

The most trusted name in History brings you

ONLINE CLASSES

(Hindi/English Medium)

By Manikant Singh

Features:-
- **Online classes**
- **Study Material &Latest updates**
- **Answer writing practice and Tests**
- **Test Series**

For videos visit
www.thestudyias.net

Correspondence Course

(Hindi/English Med.)

-Complete Study Material
-Personal guidance
-Answer writing practice and Tests

210, Virat Bhawan, IInd Floor, Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9
www.thestudyias.net :: Email: thestudyias@gmail.com /thestudyias
Ph : 011-27653672, 011-42870015, 9999278966, 9999516388